Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

R
20.6
ATM-G

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय संख्या ८९३.१२२०

आगत पंजिका संख्या २३३५१

पुस्तकालय

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

तिथि	संख्या	तिथि	संख्या
8 JUL 1968			
V. 98016			

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तिथि	संख्या	तिथि	संख्या

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

R
20.6
ATM-G

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
कृपया पुस्तक के ऊपर कोई निशान आदि
न लगायें।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

R
20.6
RTm

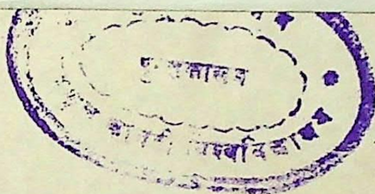
पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

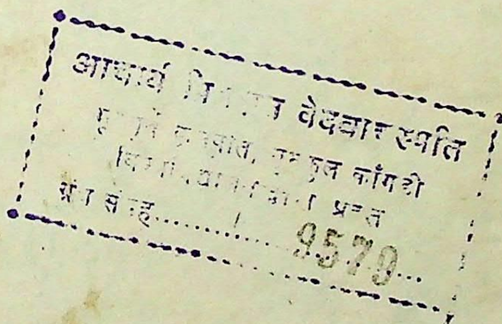
वर्ग संख्या........... आगत संख्या...........

पुस्तक-विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित ३० वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापिस आ जानी चाहिए। अन्यथा ५० पैसे प्रति दिन के हिसाब से विलम्ब-दण्ड लगेगा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri





DONATION

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

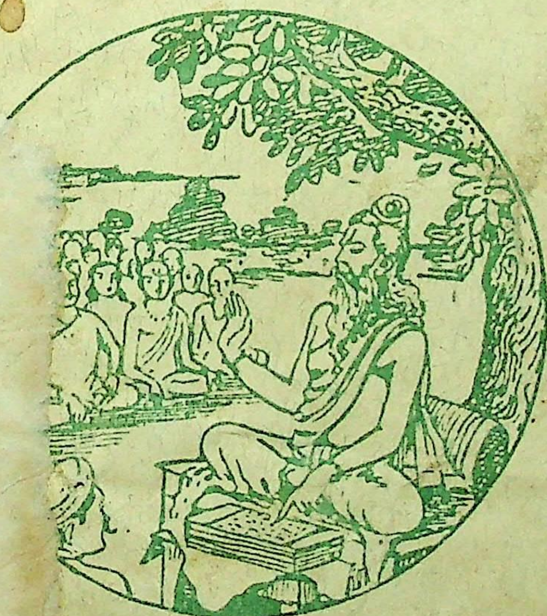
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

-साप्ताहिक-

(WEEKLY)

गीता-उपदेश



सतसंग भवन

अम्बाला शहर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

❁ अनमोल-सीख ❁

सत्य की ही हमेशा जीत होती है, झूठी की नहीं। पुराणों में लिखा है कि 'लक्ष्मी विष्णु के पाँव दबाती रहती है अर्थात् लक्ष्मी विष्णु की स्त्री है। लक्ष्मी विष्णु की छायावत् साथी है। विष्णु है, तो लक्ष्मी है। विष्णु नहीं तो लक्ष्मी भी नहीं है। यह बात बहुत ठीक है। विष्णु के अर्थ सत्य और धर्म के हैं, लक्ष्मी के अर्थ धन और जय के हैं। सो जहाँ सत्य और धर्म है, वहाँ धन और जय है। जहाँ सत्य और धर्म नहीं, वहीं धन और जय नहीं। वेदों में लिखा है—

'यतो धर्मस्ततो जयः'।

अतएव यदि विष्णु रूपी धर्म की ओर आप बढ़ोगे, तो लक्ष्मी रूपी जय और धन आपकी छाया के समान आपके पीछे-पीछे फिरा करेंगे पर विष्णु रूपी धर्म से विमुख होने पर यदि आप चाहोगे कि लक्ष्मी रूपी जय और धन प्राप्त कर लें तो ऐसा कभी नहीं हो सकता।

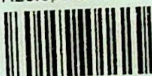
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—साप्ताहिक—

(WEEKLY)

गीता-उपदेश



★

इस अंक के विषय



सत्संग भवन

अम्बाला शहर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मालिक (Owner)—श्रीगीता सत्संग सभा,
सत्संग भवन, अम्बाला शहर।



सम्पादक, प्रकाशक तथा मुद्रक-
पं: आत्माराम 'रत्न'



वर्ष ४} {१७६वाँ सप्ताह
(११ नवम्बर—१९६५)



मूल्य-१० पैसे





'गीता-उपदेश' हर 'गुरुवार' को निकलता है।



मुद्रणालय-
"हितैषी प्रैस"
सत्संग भवन
अम्बाला शहर



CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय !

श्रीमद्भगवद्गीता

* चौथा-अध्याय *

(गताङ्क से आगे)

श्लोक २७

और—

सर्वाणीन्द्रियकर्माणि प्राणकर्माणि चापरे ।
आत्मसंयमयोगाग्नौ जुह्वति ज्ञानदीपिते ॥२७॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

❀ पदच्छेद ❀

सर्वाणि इन्द्रिय-कर्माणि प्राण-कर्माणि च अपरे ।
आत्म-संयमयोग-अग्नौ जुह्वति ज्ञान दीपिते ॥

❀ शब्दार्थ ❀

सर्वाणि=सारे
इन्द्रिय-=इन्द्रियों के
कर्माणि=कर्मों
प्राण-=प्राण
कर्माणि=कर्मों के
च=और
अपरे=कई एक

आत्म-=आत्म
संयम-=संयम रूपी
योग-=योग की
अग्नौ=अग्नि में
जुह्वति=होमते हैं
ज्ञान-=ज्ञान से
दीपिते=प्रज्वलित

—अर्थ—

और कई एक सर्व इन्द्रिय-कर्मों तथा प्राण-कर्मों को ज्ञान से प्रज्वलित आत्म-संयमरूपी योगाग्नि में होमते हैं ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पं० आचार्य प्रियव्रत वेद वाचस्पति ६२२६
स्मृति संग्रह
9579

* व्याख्या *

पहला आशय यह है कि सद्सत् के विवेक द्वारा अपने आपको, अर्थात् अपने मन, बुद्धि इत्यादि को वश में करने से शुद्ध अंतःकरण में जो परोऽक्षज्ञान वा संप्रज्ञात समाधि होती है, और उस (परोऽक्षज्ञान वा संप्रज्ञात समाधि) में चित्तवृत्ति के पूर्ण स्थिर तथा अत्यंत निरुद्ध होने से जो अपरोऽक्षज्ञान वा असंप्रज्ञात समाधि हो जाती है, उसको ज्ञान से प्रज्वलित आत्मसंयम योगाग्नि कहते हैं, इस आत्म-संयमरूपी योगाग्नि के प्रचंड होने पर सारे इन्द्रियों के कर्म तो भस्मीभूत हो जाते हैं, और प्राणों के कर्म शिथिल पड़ जाते हैं। अर्थात् जैसे सर्वसाधारण पुरुष यहाँ जीने की इच्छा तथा अर्थों की इच्छा के अधीन होकर श्वासादि लेते और कर्म करते रहते है (जिससे इन्द्रियों और प्राणों के कर्मों को वे इच्छारूपी अग्नि में होमते हैं), ऐसे ज्ञानवान् पुरुष नहीं करते। उनके भीतर तो ज्ञानाग्नि के प्रचंड होने पर लोक परलोक की इच्छा तथा जीने की भी इच्छा जाती रहती है। यदि वे कर्म करते हैं तो स्वाभाविक

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

या भगवत्-निमित्त, अथवा लोगों के कल्याण-निमित्त करते हैं; यदि वे प्राण लेते हैं तो जीने की इच्छा से नहीं, किन्तु प्रारब्धानुसार स्वाभाविक लेते हैं, और संसार वा जीने से इतने उपराम हुए होते हैं कि शरीर छूटने की घड़ी को बाट ताकते रहते हैं। ऐसे महात्मा के मरने पर प्राण उत्क्रांत नहीं होते बल्कि समष्टि प्राणों में लीन हो जाते हैं, और न उनके कर्म पुनर्जन्म बनाते हैं, बल्कि जो कुछ वे करते हैं, वे सब ज्ञानाग्नि में दग्ध हो जाते हैं, क्योंकि कर्म के समय उनके भीतर कोई कर्तृत्वादि भाव नहीं होता बल्कि हृदय में दृढ़ निश्चय वा ज्ञान यह होता है कि "मैं अजन्मा, अविनाशी, अकर्त्ता, अभोक्ता और साक्षी हूँ।" इस प्रकार कई एक महात्मा आत्मज्ञान से प्रचंड की हुई आत्म-संयमरूपी योगाग्नि में इन्द्रियों के और प्राणों के कर्मों को होमते रहते हैं।



CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



श्रीभास्कराचार्य

महाराष्ट्र नासिक के पास एक ताम्रपत्र पाया गया है। उससे पता लगता है कि भट्टभास्कर ज्यौतिषाचार्य भास्कर के पूर्व-पुरुष थे। ये शाण्डिल्य-गोत्र में उत्पन्न हुए थे। इनके पिता का नाम त्रिविक्रम था। ये कविचक्रवर्ती कहे जाते थे 'सिद्धान्तशिरोमणि'-कर्ता ज्योतिषी भास्कराचार्य इनकी छठी सन्तति-परम्परा में हुए। वेदान्तसूत्र पर इन्होंने भाष्य लिखा था। इन्होंने भेदाभेदवाद की स्थापना की। ये ब्रह्म को सगुण-निराकार मानते थे।



CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर्मपुत्र युधिष्ठिर के जीवन

—से—

❋ आदर्श शिक्षा ❋

लेखक—श्री जयदयाल जी गोयन्दका

(गताङ्क से आगे)

विद्वत्ता, बुद्धिमत्ता, समता

एक समय साक्षात् धर्म ने महाराज युधिष्ठिर की परीक्षा लेने के लिए हरिण का रूप धारण किया। वे किसी अग्नि होत्री ब्राह्मण की अरणी (जिससे अग्नि प्रकट की जाती है) को अपने सींगों में उलझा कर जंगल में चले गए। ब्राह्मण व्याकुल होकर महाराज युधिष्ठिर के पास पहुँचा। उसने उससे हरिण द्वारा अपनी अरणी ले जाने

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की बात कही। ब्राह्मण ने धर्मराज युधिष्ठिर से यह याचना की, कि वे किसी प्रकार उस अरणी को ढुँढवा कर उसे दें ताकि अग्निहोत्र का काम बंद न हो। यह सुनना था कि महाराज युधिष्ठिर अपने चारों भाइयों को साथ लेकर उस हरिण के पद-चिन्हों का अनुसरण करते हुए जंगल में बहुत दूर चले गए। किन्तु इतने में वह हरिण अन्तर्धान हो गया। सभी भाई प्यास से व्याकुल होकर और थक कर एक वट वृक्ष के नीचे बैठ गए। कुछ देर बाद धर्मराज की आज्ञा ले कर नकुल जल की खोज में निकले। वे जल्दी ही एक जलाशय पर पहुँचे। परन्तु ज्यों ही उन्होंने वहाँ के जल को पीना चाहा, त्यों ही ये आकाश वाणी हुई—'माद्रीपुत्र नकुल! यह स्थान मेरा है। मेरे प्रश्नों का उत्तर दिए बिना कोई भी इसका जल नहीं पी सकता। इसलिये पहले तुम मेरे प्रश्नों का उत्तर दो फिर स्वयं जल पीओ तथा भाइयों के लिए भी ले जाओ।' किन्तु नकुल तो प्यास के मारे बेचैन हो रहे थे, उन्होंने उस आकाश-वाणी की ओर ध्यान न दिया और जल पी लिया। फलस्वरूप जल पीते ही उनकी मृत्यु हो गयी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इधर नकुल के लौटने में विलम्ब हुआ देखकर धर्मराज की आज्ञा से क्रमशः सहदेव, अर्जुन और भीम—ये तीनों भाई भी उस जलाशय के निकट आए और इन तीनों ने भी प्यास से व्याकुल होने के कारण यक्ष के प्रश्नों की परवाह न करते हुए जलपान कर ही लिया और उसी प्रकार इन लोगों की क्रमशः मृत्यु हो गई। अन्त में महाराज युधिष्ठिर को स्वयं ही उस जलाशय पर पहुँचना पड़ा। वहाँ उन्हें अपने चारों भाइयों को मरा देख कर बहुत दुःख और आश्चर्य हुआ। वे उनकी मृत्यु का कारण सोचने लगे। जल की परीक्षा करने पर उसमें कोई दोष दिखाई नहीं पड़ा और न उन मृत भाइयों के शरीर पर कोई घाव ही दीख पड़ा। अतः उन्हें उनकी मृत्यु का कोई कारण समझ में नहीं आया। थोड़ी देर बाद अत्यन्त प्यास लगने के कारण जब वे भी जल पीने के लिए बढ़े तब फिर वही आकाश वाणी हुई। उसको सुनकर धर्मराज ने आकाशचारी का परिचय पूछा। आकाशचारी ने अपने को यक्ष बतलाया तथा ये भी कहा कि 'तुम्हारे भाइयों ने सावधान करने पर भी मेरे प्रश्नों का उत्तर नहीं दिया,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लापरवाही के साथ जल पी लिया। इस लिए मैंने ही इनको मार डाला है। तुम तो मेरे प्रश्नों का उत्तर देकर जल पी सकते हो। अन्यथा तुम्हारी भी यही गति होगी।' महाराज युधिष्ठिर ने कहा—'यक्ष! तुम प्रश्न करो। मैं अपनी बुद्धि के अनुसार तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर देने की चेष्टा करूँगा।' इस पर यक्ष ने बहुतेरे प्रश्न किए और महाराज युधिष्ठिर ने उसके सब प्रश्नों का यथोचित उत्तर दे दिया। यहाँ उन सारे के सारे प्रश्नों का उल्लेख न करके केवल धर्मराज द्वारा दिए गए उत्तरों का अधिकांश भाग दिया जाता है। महाराज युधिष्ठिर ने यक्ष से कहा—

वेद का अभ्यास करने से मनुष्य श्रोत्रिय होता है। तपस्या से महत्ता को प्राप्त करता है। धैर्य रखने से दूसरे सहायक बन जाते हैं। वृद्धों की सेवा करने से मनुष्य बुद्धिमान होता है। तीनों वेदों के अनुसार किया हुआ कर्म नित्य फल देता है। मन को वश में रखने से मनुष्य को कभी शोक का शिकार नहीं होना पड़ता। सत् पुरुषों के साथ की हुई मित्रता कभी जीर्ण नहीं होती। मान के त्याग में मनुष्य सबका प्रिय होता है। क्रोध के त्याग से

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शोक रहित होता है। कामना के त्याग से अर्थ की सिद्धि होती है। लोभ के त्याग से वह सुखी होता है। स्वधर्म पालन का नाम तप है, मन को वश में करना दम है, सहन करने का नाम शम है, कर्त्तव्य से विमुख हो जाना लज्जा है, तत्त्व को यथार्थ रूप से जानना ज्ञान है, चित्त के शान्त भाव का नाम शम है, सब को सुखी देखने की इच्छा का नाम आर्जव है। क्रोध मनुष्य का वैरी है। लोभ असीम व्याधि है। जो सब मनुष्यों के हित में रत है, वह साधु है और जो निर्दयी है, वह असाधु है। धर्मपालन में मूढ़ता ही मोह है, अभिमान ही मान है, धर्म में अकर्मण्यता ही आलस्य है, शोक करना ही मूर्खता है, स्वधर्म में डटे रहना ही स्थिरता है। इन्द्रिय निग्रह धैर्य है, मन के मल का त्याग करना स्नान है। प्राणियों की रक्षा करना दान है। धर्म के जानने वाला ही पण्डित तथा नास्तिक ही मूर्ख है। जन्म-मरण रूप संसार को प्राप्त करने वाली वासना का नाम काम है। दूसरे की उन्नति को देख कर जो मन में सन्ताप होता है उसका नाम मत्सरता है, अहंकार ही महान् अज्ञान है। मिथ्या धर्मा-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चरण दिखाने का नाम दम्भ है। दूसरे के दोषों को देखना पिशुनता है। जो पुरुष वेद, धर्म-शास्त्र, ब्राह्मण, देवता, श्राद्ध और पितर आदि में मिथ्या बुद्धि रखता है, वह अक्षय नरक को पाता है। प्रिय वचन बोलने वाला लोगों को प्रिय होता है। विचार कर कार्य करने वाला प्रायः विजय पाता है। मित्रों की संख्या बढ़ाने वाला सदा सुखपूर्वक रहता है। धर्म में रत पुरुष सद्‌गुणों को प्राप्त करता है। प्रतिदिन प्राणी यमलोक की यात्रा करते हैं, इसको देख कर भी बचे हुए लोग सदा स्थिर रहना चाहते हैं, इससे बढ़ कर और आश्चर्य क्या है! जिसके लिये प्रिय-अप्रिय, सुख-दुःख; भूत-भविष्य आदि सब समान हैं, वही निःसन्देह सब से बड़ा धनी है। इस प्रकार समुचित उत्तर पाने के बाद यक्ष प्रसन्न हुआ। उसने महाराज युधिष्ठिर को जल पीने की आज्ञा दी और कहा—इन चारों भाइयों में से तुम जिस एक को कहो, मैं जिला दूँ।' इस पर महाराज युधिष्ठिर ने अपने भाई नकुल को जिलाने के लिए कहा। यक्ष ने आश्चर्य से चकित होकर पूछा 'अजी! दस हज़ार हाथियों का बल रखने वाले भीम

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को तथा जिसके अपार बाहुबल का तुम लोगों को भरोसा है, उस अर्जुन को छोड़ कर नकुल को क्यों जिलाना चाहते हो ?' महाराज युधिष्ठिर ने कहा—'जो मनुष्य अपने धर्म का नाश कर देता है, या यों कहो कि त्याग कर देता है, उसका धर्म भी नाश कर देता है। परन्तु जो धर्म की रक्षा करता है, धर्म उसकी भी रक्षा करता है। यक्ष ! मुझे लोग सदा धर्मपरायण रहने वाला समझते हैं, इसलिये मेरा भाई नकुल ही जीवित हो, मैं धर्म को नहीं छोड़ सकता। मेरे पिता की कुन्ती और माद्री दो स्त्रियाँ हैं, वो दोनों पुत्रवती बनी रहें, ऐसा मेरा निश्चित विचार है। क्योंकि मेरे लिये जैसी मेरी माता कुन्ती है, वैसी माद्री है। उन दोनों में मेरे लिए कोई भी न्यूनाधिक नहीं है। इसलिए मैं उन दोनों माताओं पर समान भाव रखना चाहता हूँ। कुन्ती का पुत्र मैं जीवित हूँ ही, अब माद्री का पुत्र नकुल भी जीवित हो जाय। क्योंकि समता ही सब धर्मों में सब से बड़ा धर्म है।' महाराज युधिष्ठिर के धर्ममय उत्तर सुन कर यक्ष बड़ा ही प्रसन्न हुआ। उसने कहा।—'हे युधिष्ठिर ! तुम सचमुच बड़े धर्मात्मा हो,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्थ और काम से बढ़ कर तुम धर्म को मानते हो। तुम्हारे सभी भाई जीवित हो जायँ। यक्ष के यह कहते ही चारों भाई तत्काल जी उठे। महाराज युधिष्ठिर ने यक्ष से यथार्थ परिचय देने की प्रार्थना की। तब यक्ष ने खुल कर कहा—'वत्स युधिष्ठिर ! मैं तुम्हारा पिता साक्षात् धर्म हूँ। तुम्हारी परीक्षा लेने के लिए मैंने ही हरिण का रूप धारण किया था और उस ब्राह्मण की अरणी उठा ले गया था।' इस के पश्चात् धर्म ने महाराज युधिष्ठिर को अरणी लौटा दी तथा युधिष्ठिर से वर माँगने के लिये कहा। महाराज युधिष्ठिर ने कहा—'देव ! आप सनातन देवों के देव हैं। मैं आप के दर्शन से कृतार्थ हो गया हूँ। आप जो कुछ भी वर देंगे मैं उसे शिरोधार्य करूँगा। विभो ! आप मुझे यही वर दें कि मैं क्रोध, लोभ, मोह आदि को सदा के लिये जीत लूं तथा मेरा मन दान, तप, सत्य में निरन्तर लगा रहे। धर्म ने कहा—'पाण्डव ! ये गुण तो स्वभाव से ही तुम में वर्तमान हैं। तुम तो साक्षात् धर्म हो, तथापि तुम ने मुझ से जितनी वस्तुएँ माँगी हैं वे सब तुम्हें प्राप्त हों। ये कह कर धर्म अन्तर्धान हो गए।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाराज युधिष्ठिर द्वारा दिए गए इन उत्तरों की मार्मिकता को सम्भव है, आज के नास्तिक युग में पैदा होने के कारण लोग न समझ सकें तथा महाराज युधिष्ठिर का मूल्य न आँक सकें, किन्तु यदि सरल मन से विचार किया जाए तो हम लोगों को महाराज युधिष्ठिर के महान् व्यक्तित्व का प्रत्यक्षीकरण हो सकेगा और हम सब लोग उनकी विद्वत्ता, बुद्धिमत्ता एवं समता से भरे हुए वचनों को सुनकर 'धन्य, धन्य' कह उठेगें ! धर्मराज के जीवन में क्रोध, लोभ, मोह आदि दुर्गुणों का लेश भी नहीं था, दान, तप, सत्य आदि दैवी गुणों के वे अधिष्ठान थे, फिर भी उन्होंने उपयुक्त वर की ही याचना की। धन्य है उनकी निराभिमानता !

(शेष आगामी सप्ताह)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पं० आचार्य प्रियव्रत वेद वाचस्पति प्रदत्त संग्रह

लाख-लाख
—की—
एक बात

(गताङ्क से आगे)

(२३)

प्रश्न—नाना प्रकार के भूषणों में से सबसे उत्तम तथा श्रेष्ठ भूषण क्या समझना चाहिये ?

उत्तर—मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। साधारण मनुष्य के लिये समाज में रहना-सहना अनिवार्य है। समाज में रहने के फल स्वरूप—

मनुष्य जैसी संगत करता है,
वैसी विचार-धारा ग्रहण करता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैसी विचार-धारा
वैसी ही कर्म-धारा बन जाती है।
जैसे कर्म, वैसा स्वभाव
जैसा स्वभाव, वैसा चरित्र।

फलतः नाना प्रकार की दृढ़ आदतों का ही दूसरा नाम चरित्र या चाल-चलन समझना चाहिए। बस, इसी चरित्र का ही तो दूसरा नाम मनुष्य है। बाहरी शरीर, वेश-भूषा तथा पद आदि को मनुष्य समझना तो नितान्त मूर्खता तथा उजड्डता है।

बस; लाख की एक बात—

भूषणों में उत्तम भूषण मनुष्य
का उत्तम चरित्र ही है।

इसी भले-बुरे चरित्र के कारण से ही तो यह कहा जाता है—

आदमी आदमी में अन्तर,
कोई हीरा, कोई कंकर।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२४)

प्रश्न—सब से उत्तम तीर्थ क्या है ?

उत्तर—कुछ-न-कुछ सोचते-विचारते रहना तो मनुष्य का एक सहज स्वभाव बन चुका है। परन्तु यह सोचना-विचारना मन से होता है। प्रकृति का नियम तो यह है कि जो सोचता है, मी 'कर्त्ता' है और, जो 'कर्त्ता' होता है, वही 'भोक्ता' भी होता है—यह अनिवार्य है। बस, इसी कर्ता 'भोक्ता' भी होता है—यह अनिवार्य है। बस, इसी कर्ता-भोक्तापने में मानव कोहलू के बैल की तरह दुःख-सुख की परिक्रमा करता-करता बहुत दुःखी हो जाता है। तब कहीं प्रभु-कृपा से उसके जीवन में एक दिन ऐसा भी आता है जब अपने संसारी मन को ही वह दुःखों की जड़ समझने लगता है। बस, अब वह खून-पसीना एक करते हुए अपने अशुभ मन को शुभ बनाने के लिये—

(क) सत्संग

(ख) सत्शास्त्र

(ग) सत्पुरुष

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का भली प्रकार से सहारा लेता है। इस प्रकार श्रवण, मनन तथा निदिध्यासन की सीढ़ियों को पार करता हुआ वह अपने मन को बिलौर के शीशे के समान निर्मल तथा उज्ज्वल बनाने में सफल हो जाता है। बस, यही विशेष रूप से शुद्ध किया हुआ अपना मन ही सब से उत्तम तीर्थ समझा जाता है।

(शेष आगामी सप्ताह)

गीता—महिमा

"जैसे सब सरिताओं का समावेशस्थान समुद्र है, जड़-चेतन सृष्टि का उपादान-स्थान ब्रह्म है, विज्ञानों का उद्भव-स्थान नित्य-विज्ञान है, वैसे ही सारी दार्शनिक विद्याओं का समावेश-स्थान, सार्वभौम भक्ति-सृष्टि का उपादान-स्थान और मोक्ष-साधनीभूत विविध विज्ञानों का उद्भव-स्थान गीता है।"



CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कृष्ण हमको प्यार की तो वो, अकसीर दे गया,
बिगड़ी बनाने वाली दवा, पीर दे गया ।

(१)

तारीकियों में मंज़िलें पाने के वास्ते,
तूफ़ाँ में भी कदम बढ़ाने के वास्ते ।
तप और त्याग की हमें तासीर दे गया ॥
कृष्ण हम को........

(२)

हर दिल में प्रेम भक्ति का, दीपक जलायेंगे,
गीता जी का सन्देश, न हरगिज़ भुलायेंगे ।
दो धारी वो कर्म की, शमशीर दे गया ॥
कृष्ण हम को.........

(३)

दीनों को और अनाथों को, न हम सतायेंगे,
और सत्यमेव जयते का डंका बजायेंगे ।
सर्वभूत हितेरतः की तहरीर दे गया ॥
कृष्ण हम को.........



CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साधु की झोली से

(सत्संग भवन की ओर से)

[गताङ्क से आगे]

(१५६)

सीढ़ी, नाकि पत्थर !

इस मार्ग पर चलने वालों के सम्मुख प्रथम कई कठिनाइयाँ या बाधायें आती ही हैं लेकिन जिन्होंने आगे बढ़ना होता है वे इन रुकावटों को मार्ग का रोड़ा Stembling Block (जिससे ठोकर खाकर गिर पड़ते हैं) नहीं बनाते बल्कि उनको तरीके से रखकर Stepping Stone अर्थात् चढ़ने की सीढ़ी का डराडा बना लेते हैं अर्थात् अपने भावनानुसार उस बाधा के आने पर एक विशेष प्रेरणा प्राप्त करके और भी दृढ़ होकर आगे बढ़ निकलते हैं। सो, बाधाओं को Stembling Block

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के स्थान पर Steping stone बनाना ही बुद्धिमत्ता है।

(१६०)

'आराम है हराम'

भारत की गुरबत पुकार-पुकार कर कह रही है, 'आराम है हराम'। भारत की धरती का कण-कण, भारत के वृक्षों की एक-एक पत्ती, भारत की घास का एक-एक तीला, तथा भारतके अच्छे लीडर पुकार-पुकार कर कह रहे हैं, आराम है हराम, आराम है हराम। विशेष कर ग़रीबी के राक्षस को मार भगाने के लिये तो वक्त पुकार-पुकार कर कह रहा है,

ओ भारत के नौजवानो,
आज़ादी के दीवानो।
भारत के कोने-कोने में,
पहुँचा दो यह पैग़ाम।
क्या ?
आराम है हराम, आराम है हराम !

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगर कान रखते हो, ऊँचा नहीं सुनते हो, बहरे नहीं हो गये हो तो वक्त की इस पुकार को सुनो तो जहाँ भी हो जुट जाओ। मैं 'साधु' रूप में हूँ, मैं अपनी जगह जुट जाओ, आप गृहस्थी हैं और अपनी जगह जुट जाऊँ, Students अपनी जगह जुट जायें। अगर आप नौकरी करते हैं तो वहीं जुट जाइये, कोई मेरी बहिन अध्यापिका है वह अपने क्षेत्र में जुट जाये। माँ अपने आपको बच्चों के लिये खपा दे। आप कहीं भी हो नारा लगा दो, 'आराम है हराम' तब बड़ी जल्दी हमारा देश चमक उठेगा। सारे पक्का कर लो कि आराम हमारे लिये हराम है। हमने जुटना है, लगना है। शाबाश ! यही अपने देश के साथ इन्साफ़ करना है।

(शेष आगामी सप्ताह)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प० आचार्य प्रियव्रत वेद
अनमोल-सम्पत्ति
स्मृति संग्रह
9579

एक कहानी है कि किसी राजा के असंख्य रानियाँ थीं, जो हर प्रकार से अपने राजा को प्रसन्न रखने में प्रयत्नशील रहती थीं। एक दिन राजा ने सब रानियों को बुलाकर कहा कि मैं तुम से बड़ा प्रसन्न हूँ, इस लिये मेरी राजधानी में जो वस्तु माँगो, मैं देने को तैयार हूँ। इस पर किसी ने मोतियों का हार माँगा, किसी ने असंख्य आभूषण माँगे, किसी ने राजधानी का कुछ भाग माँगा, किसी ने लाल पन्ने आदि माँगे, मगर केवल एक ने राजा का हाथ पकड़कर कहा कि मैं आपको माँगती हूँ, जिस पर वह सब रानियों से बढ़ गई, क्योंकि स्वयं राजा को माँगने से उसने सारे राज्य के स्वामी को अपना बना लिया था। इसी प्रकार वह आत्मदेव जिसकी शक्ति से सम्पूर्ण कामनायें पूरी होती हैं, उसको कोई विरले ही माँगते हैं और शेष सब संसारी वस्तुओं को, जो बिलकुल तुच्छ, हीन और वास्तव में अवस्तु हैं, माँगते रहते हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुःखों का मूल

मातृ-हत्या, स्त्री-हत्या, मनुष्य-हत्या
प्रकार की हत्याएं अगणित हैं, पर प्रत्येक
ईश्वर का अनुभव न करके आप ईश्वर-हत्य
हत्या नामक घोर पाप करते हैं। जब
मनुष्य को पिता, मित्र, भाई या
सम्बोधित करते हैं, और उसके भीतर प
अनुभव नहीं करते तब आप शकलों का
प्रयोग करते हैं कि अन्तस्थ परम-देव भूल
हैं। जब शरीर आकार अथवा बाह्य
रूप इतना प्रधान हो जाता है कि जि
का ईश्वर भूल जाए, तब आपकी अधोगति
जब-जब आप हृदयस्थ देवता को भूल
पाप करते हैं तब-तब इस संसार में
सर्वनाश होता है। यह ईश्वर हत्या, यह
ही अज्ञान है और यही अज्ञान संसार
मूल है।

—स

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

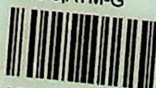
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

GURUKUL KANGRI LIBRARY

	Signature	Date
	Dharma	5.11.03
R.		
Any other		
Checked		

9579

पं० आचार्य प्रियव्रत विद्या वाचस्पति प्रदत्त संग्रह



CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar